Rs. 5.00/-

Look n Learn Magazine

10th November 2019 Every Fortnight English, Hindi & Gujarati

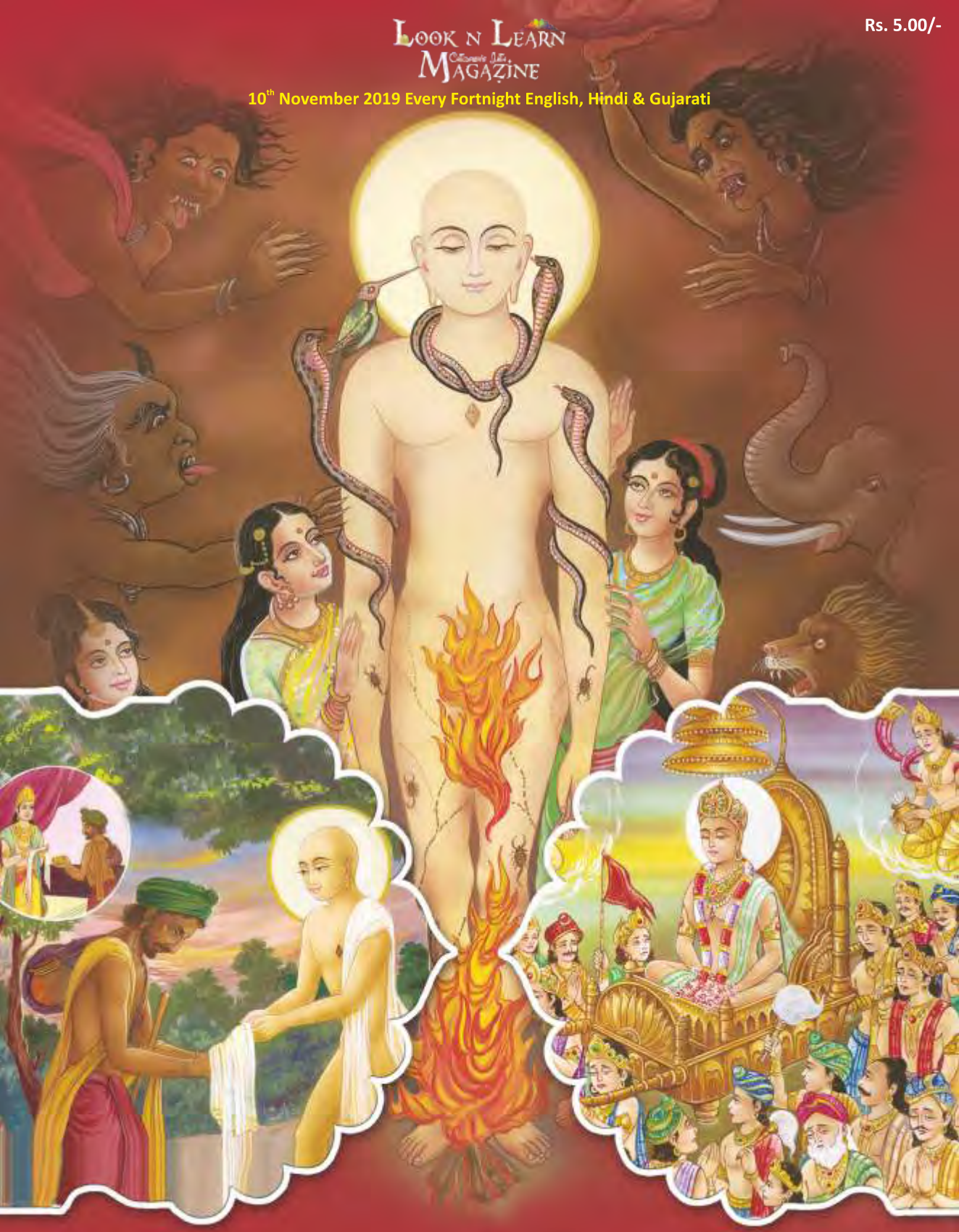

साधना से सिध्दी

Year - 13, Vol: 14, Issue: 07, Date: 10.11.2019
Editor: Ashokbhai Sheth 20, Vanik Niwas, 1st floor, Cama Lane, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.

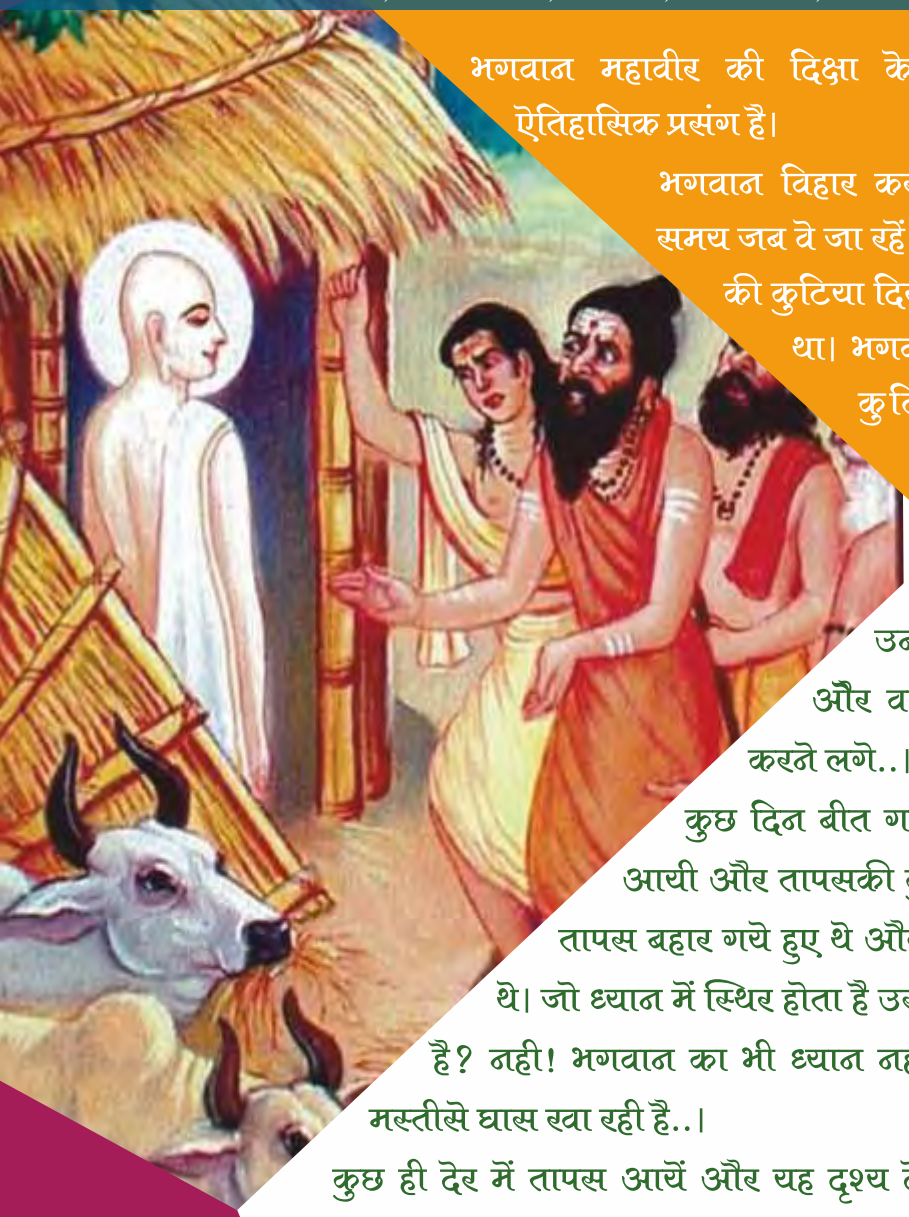

तापस और भगवान महावीर

भगवान महावीर की दिक्षा के बाद जीवनका यह एक ऐतिहासिक प्रसंग है।

भगवान विहार करते हुए आगे बढते है। एक समय जब वे जा रहें थें.. तब उन्हे वहां एक तापस की कुटिया दिखी। चातुर्मास शुरु होनेवाला था। भगवानने सोचा..''क्यों न इस कुटिया में चातुर्मास किया जाए?''

उन्होंने तापस से आज्ञा ली और वहीं खडे खडे ध्यान साधना करने लगे..।

कुछ दिन बीत गये, तभी एक दिन कुछ गैया आयी और तापसकी कुटिया का घास खाने लगी। तापस बहार गये हुए थे और भगवान तो अपने ध्यान में थे। जो ध्यान में स्थिर होता है उसका आसपास में ध्यान होता है? नही! भगवान का भी ध्यान नहीं है कि गैया आयी है और मस्तीसे घास खा रही है..।

कुछ ही देर में तापस आयें और यह दृश्य देखा, फिर क्या था? उसने गुस्से में आकर भगवान से कहां, ''पशु-पक्षी भी अपने घरका, घोसलेका रक्षण करतें है, आप राजपुत्र होकर भी कुटिया की रक्षा नहीं कर सकतें?''

भगवान ने यह सुना, और शांती से ही तापसकी कुटिया को छोडकर चले गये और हम सबको एक अनमोल शिक्षा देतें गये.. कि कीसी भी परिस्थिती में हमें क्रोध नहीं करना चाहिए और हर परिस्थिती का सहर्ष स्वीकार करना चाहिए।

Cheque or Draft:
Arham Yuva Group

Parasdham
Vallabh Baug Lane, Tilak Road,
Ghatkopar (E), Mumbai - 77

Subscription for 10 years
India : Rs. 1000/-
Abroad : Rs. 5000/-

एक दिन संध्याके समय भगवान विहार करके पासके कुमारग्रामकी सीमा पर पधारे और एक अलग स्थान में खड़े-खड़े ध्यानावस्था में लीन हो गये। कुछ ही देर बाद एक ग्वाला वहाँ आया और अपने बैलोंको वहाँ बिठाकर उसका ध्यान रखने के लिऐ भगवान को कहकर चला गया।

भगवान के प्रतिकूल उपसर्ग (१)

इधर बैल तो घास खाते-खाते दूर चले गये। ग्वाला गाँवसे लौटकर आया तो देखता है कि उसके बैल वहाँ नहीं है। उसने भगवान से पूछा कि मेरे बैल कहाँ हैं?

भगवान तो मौन थे। उसको कोई उत्तर नहीं मिला। वह बैलों की खोज में सारी रात इधर उधर घुमता रहा और जब वापस आया तो क्या देखता कि बैल भगवान के पास बैठे हैं।

ग्वाले को गुस्सा आया और भगवान को भला-बूरा सुनाने लगा और रस्सी लेकर मारने दोड़ा। उसी समय इन्द्रलोक से इन्द्रने आकर उसका हाथ पकड़कर उसे रोकते हुए कहा, जानते हो, यह कोइ सामान्य साधु नहीं है, यह तो राजा सिध्धार्थ के दीक्षित पुत्र वर्धमान है।

पता है बच्चों, भगवानने क्यों ग्वाले के द्वारा किये गये अपमान का जवाब नहीं दिया? क्योंकि भगवान को अपने सारे कर्मो का क्षय करके मोक्ष में जाना था... भगवान बनना था।

यदि हमें भी भगवान बनना हैं तो, हमें भी हरएक प्रतिकूल संयोगो में शांत रहना चाहिए, मौन रहना चाहिए।

भगवान के प्रतिकूल उपसर्ग (२)

भगवान ने गाँववालो से अनुमति माँगी। गाँववालोने चेतावनी दी थी की यहाँ मत रुको, शूलपाणि यहाँ रहनेवाले को जान से मार ड़ालता है। भगवानने कहाँ, आप चिन्ता न करे... और वे ध्यान करने लगे। जब शूलपाणि यक्ष आया तब भगवान को देखते ही अत्यंत क्रोधित हो गया। उसे लगा उसकी शक्ति को किसीने ललकारा है। आज में उसे अपनी शक्तिका परिचय दूँगा। उसने शीघ्र ही भगवानको ड़राने के लिए हृदय काप उठे एसा भयानक किया। हाथी, पिशाच, सर्प आदिके भयंकर रुप धारण कर भगवानको विविध प्रकार से हानी पहुँचाने लगा।

मगर भगवान न तो ड़रे न गभराये न अपनी साधना से विचलित हुए। भगवान तो धैर्य धरे शांतिसे साधना में मग्न रहे। शूलपाणि भगवानकी सहनशक्तिके सामने पराजित हो गया और भगवानके चरणोंमे मस्तक रखकर माफी माँगने लगा। क्षमाशील भगवानने उसे माफ कर दिया और वह हमेशा के लिए शांत हो गया और भगवानका जयजयकार करने लगा।

बच्चों ! अगर हमें भी भगवान बनना है तो भगवान जैसे क्षमावान बनना चाहिए। सामने वाला चाहे कितना ही गुस्सा करे, गलति करे हमें उसे माफ करना चाहिए क्योंकि माफी देनेवाला सदा महान होता है।

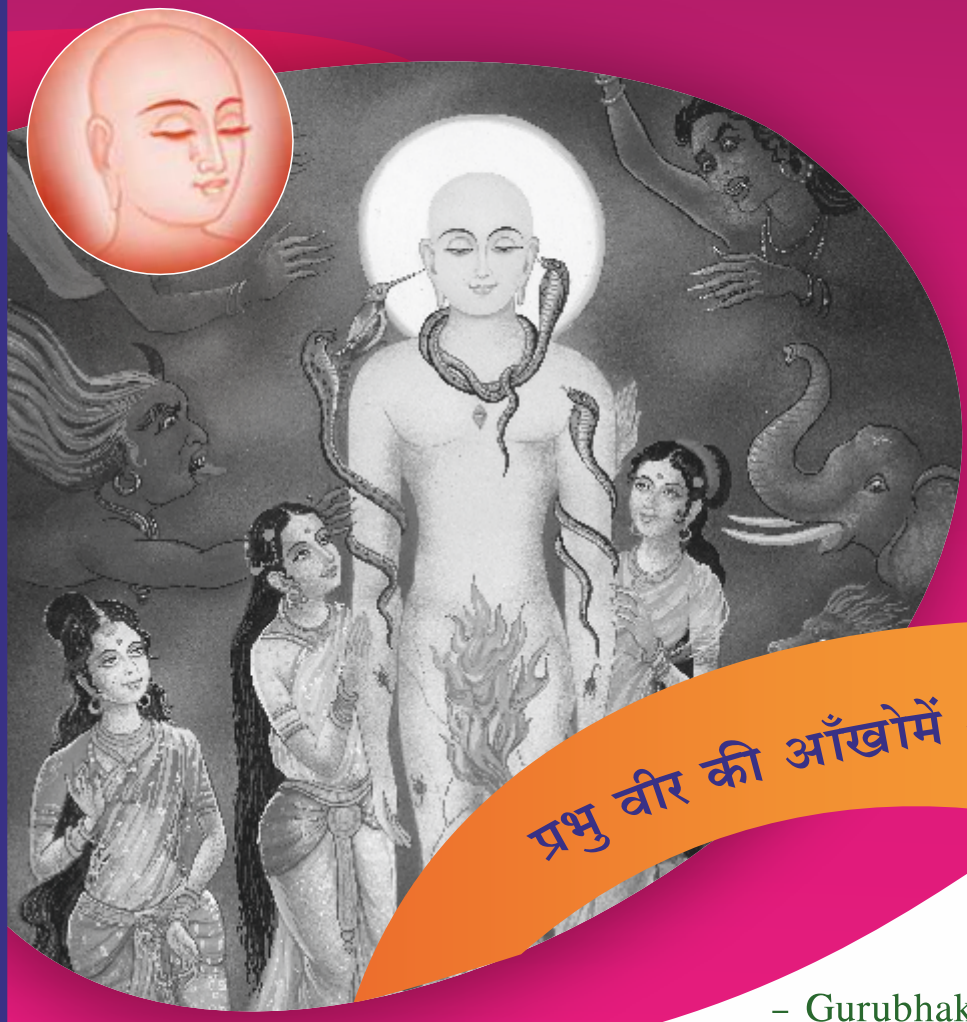

पीड़ा की वेदना के कारणवश? नहीं..

प्रभु वीर की आँखोमें अश्रु बिंदु ?

– Gurubhakt Mehta Parivaar

पीड़ा देनेवाले को कैसी वेदना भुगतनी पड़ेगी,
ऐसी करुणा की भावना के कारण से।

जब जब... अन्य की वेदना और दुख दर्द देखकर आपके हृदय में दया और करुणा के साथ साथ...

"मित्ति मे सव्व भूएसु"
"सर्व जीव मम जीव सम"
"शुभ हो सकल विश्व का"

यह शुभ भाव प्रगट होता है... तब तब...आपके अंदर महावीर हैं

भगवान के प्रतिकूल उपसर्ग (३)

भूतकाल का एक तपस्वी जैन साधु क्रोधावस्थामें मर कर दृष्टिविष सर्पके रुपमें उत्पन्न होता है और वह चण्डकौशिक नामसे प्रसिद्ध होता है। अपनी दृष्टिविष द्वारा अनेक प्राणीओंका संहार करता है। इसी कारण से वह जंगल एकदम निर्जन और भयानक बन गया था।

अनेक लोगों के मना करने के बावजुद भी भगवान उसी जंगलसे जाते है। सर्पको मनुष्य की गंध आ गयी और सोचने लगा एसे निर्जन वनमें आनेका साहस करनेवाला कौन है? मैं उसे अपनी शक्तिका परिचय जरुर कराऊंगा।

उसने भगवानके पास आकर उन्हें नष्ट करने के लिए बारबार अपनी विषपूर्ण ज्वालाएँ डाली और भगवानके पैर के अँगुठे में डंख मारकर उनके सामने देखने लगा।

भगवान शांत रहे भगवानके दिलमें करुणा थी और सर्पको हिंसासे मुक्त कराने के लिए उन्होंने कहा... **"बुज्झ बुज्झ चण्ड़कौशिक!"** चण्ड़कौशिक शांत हो गया और उसको अपने पूर्व जन्मका जाति स्मरण हो गया।

वह भगवानके चरणोंमे जा पड़ा। उसको बहुत ही पश्चाताप हुआ और उसने हिंसाका त्याग कर दिया। अन्तमें अनशन उपवासकी आराधना द्वारा मृत्यु पाकर सर्प वैमानिक देव योनिमें उत्पन्न हुआ।

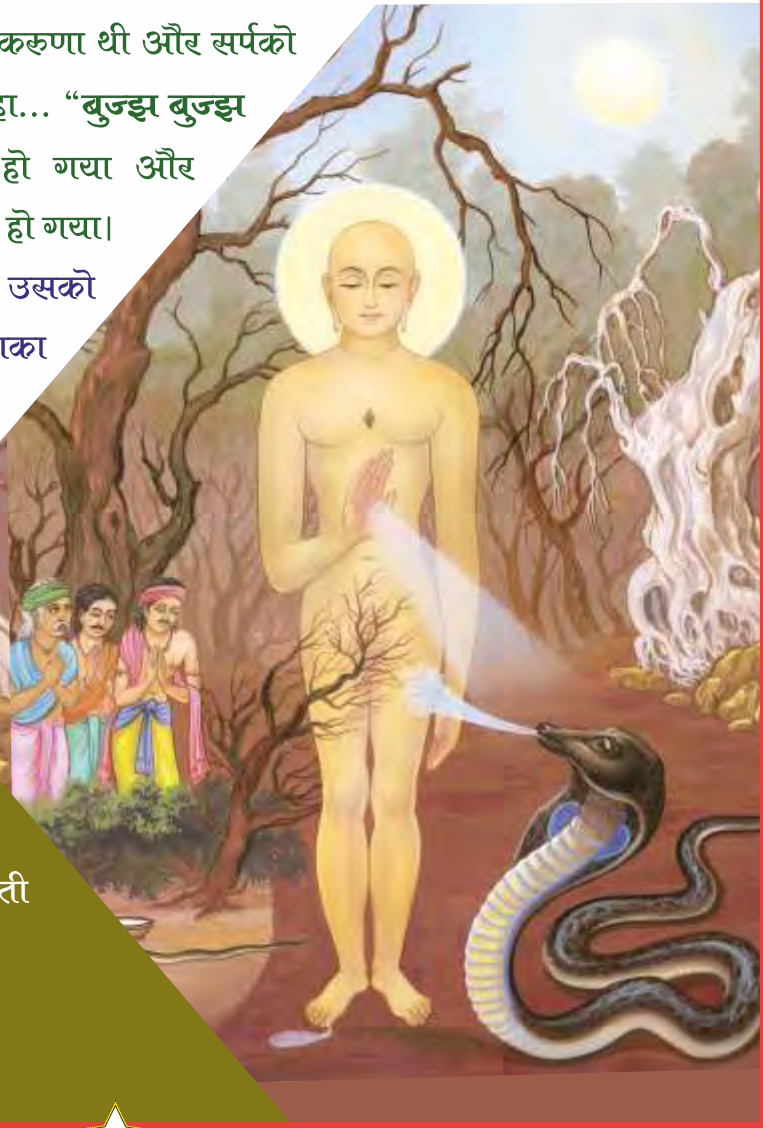

बच्चों ! हमे भी भगवान जैसा बनना है। हमें दूसरों की भलाई के लिए अपने दिल में करुणा रखनी चाहिए और सर्प के जैसे अपनी गलती पर पश्चाताप करना सिखना चाहिए।

भगवान के प्रतिकूल उपसर्ग (४)

बच्चों ! देखो, कर्म किसीको भी छोड़ते नहीं। चाहे वह सामान्य इन्सान हो या तीर्थंकर हो।

एक समय भगवान सुरभीपुर से राजगृह जाने के लिए गंगा नदी पार करने नावमें बैठकर जा रहे थे। जब नाव गहरे जलके पास पहुंची तो अचानक भयंकर तूफान उठा और नाव इधर उधर जाती हुई उछलने लगी। किंतु भगवान नावमें भी ध्यान साधनामें मग्न थे।

ऐसा भयंकर तूफान लानेवाला था पातालवासी नागकुमार! जब भगवान महावीर वासुदेवके भवमें थे तब उन्होंने नागकुमार जो सिंहके रुप में था उनको चीर कर जानसे मार दिया था। अब भगवानको देखते ही उसकी वैर वृति जाग ऊठी और भगवानको मारने के लिए अपनी दैविय शक्ति से नदीमें तूफान खड़ा कर दिया।

मगर इस तूफान की जानकारी कम्बल-शम्बल नामक नागदेवों को हुई और उन्होंने तत्काल अपनी शक्तिसे तूफानको शांत कर दिया। नाव सुखरुप किनारे पर पहुँच गई। सभी प्रवासी मानने लगे की आज यह महान आत्माकी साधना के कारण ही हमारी जान बच पायी है। सभीने भगवान को भावपूर्ण वन्दना की और हार्दिक आभार माना।

बच्चों! हमें भगवान बनना है तो हमें किसीसे वैर नहीं रखना चाहिए। आजका वैर कभी भी उदयमें आ सकता है। हमें भगवान जैसा समभाव और शांति रखनी चाहिए और भगवान जैसी साधना करनी चाहिए।

भगवान के प्रतिकूल उपसर्ग (५)

संगम देव द्वारा बीस उपसर्ग

इतने उपसर्ग सहन करने के बाद भी भगवान कभी अपनी साधना से विचलित नही हुए किंतु और भी कठिन कर्मो को क्षय करने के लिए प्रभु आगे एकान्त स्थान की ओर चले गए।

विहार करते करते भगवान पोलास चैत्य में पहुँचे। वहा उन्होंने ३ दिन के निर्जल उपवास किये और एक शिला पर खड़े रहकर 'महा प्रतिमा' नाम का तप शरू किया। यह तप में भगवान नें चित्त को स्थिर कर, बिना पलक झपकाये पूरी रात एक ही वस्तु पर नज़र को स्थिर कर ध्यान किया।

भगवान के इस अटल और अविचल ध्यान को इन्द्र ने ज्ञान द्वारा जाना और अपनी सभा में उनकी प्रशंसा की। ''ध्यान और धैर्य में भगवान की समानता कोई नहीं कर सकता है और भगवान के इस ध्यान को कोई चलित भी नहीं कर सकता है''।

वहा उपस्थित तेजोलेषी संगम देव भगवान की प्रशंसा को सहन नहीं कर सका। उसने कहा 'मनुष्य में एसा सामर्थ्य हो ही नहीं सकता है, इसे में प्रमाणित कर सकता हूँ'' और वह भगवान को ध्यान से विचलित करने के लिए शीघ्र ही दौड़ आया।

उसने एक रात्री में ही पिशाच, सर्प बिच्छू आदि प्राणी का उग्र उपद्रव, अप्सरा द्वारा प्रलोभन आदि प्रतिकूल कष्ट देनेवालें एसे बीस उपसर्ग दिये। किन्तु धीर-वीर भगवान तनिक भी न क्रोधित हुए, न अपनी साधना से चलित हुए। सर्वथा निश्चल रहे और अन्त में संगम देव सर्वथा हार मानकर वहां से चले गये।

बच्चो, अगर हमें भी भगवान जैसे बनना हो तो हमें भी एक प्रतिकूल परिस्थिति में शांत और समभाव में रहकर अपने कर्मो की निर्जरा करनी चाहिए।

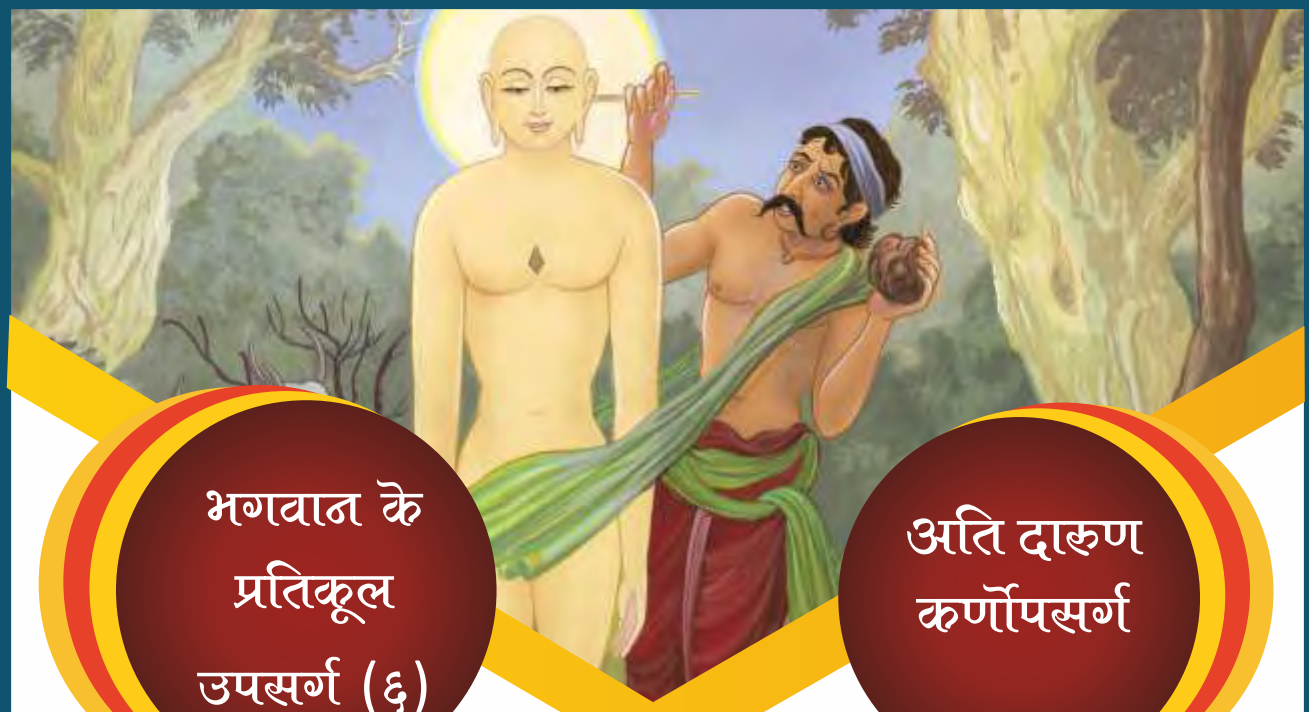

भगवान के प्रतिकूल उपसर्ग (६)

अति दारुण कर्णोपसर्ग

एक दिन भगवान जब छम्मणि गाँव के बाहर ध्यानस्थ अवस्थामें थे, तब एक ग्वाला आया और भगवान के समीप बैलों को छोड़कर गाँव में अपने काम से चला गया और कुछ समय बाद जब वह गाँव से वापस लौटा तब बैलों को वहाँ न देखकर भगवान से पूछा- 'देवार्य! मेरे बैल कहाँ गये?'

भगवान तो अपनी ध्यान साधनामें थे। वह मौन थे और भगवान द्वारा उत्तर न मिलने पर ग्वालाने गुस्से में आकर भगवान के दोनों कानों में काँस नामक लकड़ी के कीले पत्थर से ठोक दिये और कोई निकाल न सके इस लिए उनके बाहरी भागों को भी काट दिया।

ऐसे दारुण कष्टमें भी इतनी भयानक वेदना में भी भगवान जरा भी चलित नहीं हुए। वे अपने भावो में स्थिर रहे, वे अपनी साधनामें स्थिर रहे और अपने कठिन कर्मो का क्षय किया। न तो उन्होंने ग्वाले पर गुस्सा किया न द्वेष किया न वे अपनी वेदना और दुःख के कारण व्यथित हुए।

गत जन्म का भगवान की आत्मा का अज्ञान से बाँधा हुआ पापकर्म अन्तिम भवमें उदयमें आया और भगवानने उसे समभावसे सहन कर उसका भी क्षय कर दिया।

बच्चों! इसलिए भगवानने कहा है कि कुछ भी करते समय पहले सोचो, सावधान रहो क्योंकि कर्म किसीको छोड़ता नहीं आज नहीं तो कल इस जन्ममें नहीं तो अगले जन्ममें किए गए कर्मो को भूगतना ही पड़ता हैं।

भगवान के प्रतिकूल उपसर्ग

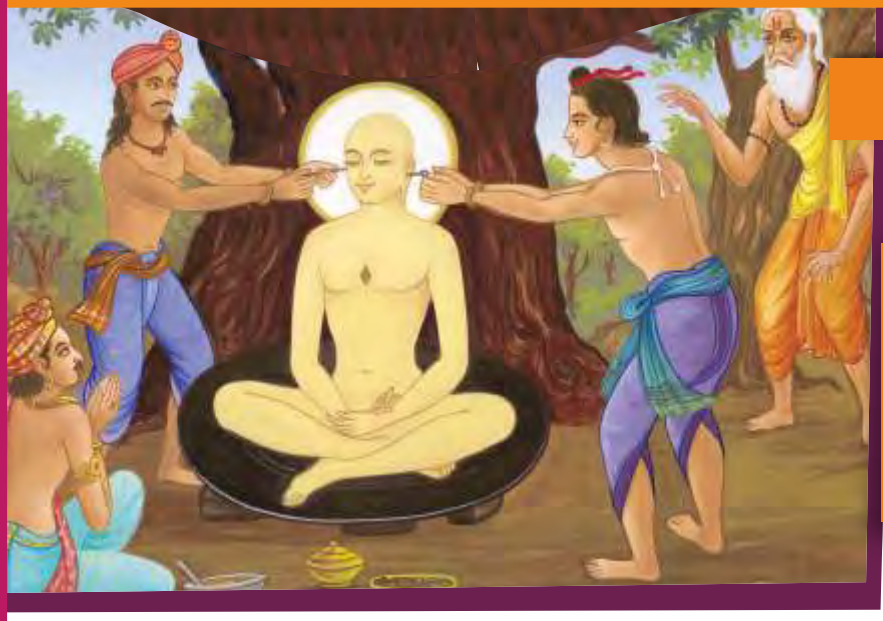

दारुण कर्णोपसर्ग का निवारण

भगवान के कानमें कीले ठोक कर ग्वाला तो वहाँ से चला गया। कुछ देर बाद भगवान शल्य सहित वहाँसे (पावा) मध्यमें पधारे और गौचरी के लिए सिध्धार्थ वणिक के घर पहुँचे, उस समय वह अपने मित्र खरक जो कि एक वैद्य थे उनके साथ बात कर रहे थे। भगवान के पधारने पर उसने हर्षसे भगवान का स्वागत किया और भावसे वंदना की।

उस समय सिध्धार्थ के मित्र वैद्यने भगवान की मुखाकृति देखकर समझ लिया कि उनके शरीरमें कही न कही कोइ शल्य है। फिर शरीर की परीक्षा करते हुए उन्हें भगवान के कानो में कीले दिखाइ दिये। मित्रने सिध्धार्थ को बताया कि भगवान के कानो में लकड़ी के तिक्ष्ण कीले खोंसे हुए है।

सिध्धार्थ यह सुनकर काँप उठा। उसने मित्र से कहाँ, 'दोस्त! ये शल्य शीघ्रही बाहर निकालो और पुण्य के भागी बनो।' बड़ी कठिनाई से कुशल-प्रयोग पूर्वक कीले निकाल दिये।

उस समय भी भगवान को भयंकर वेदना हुई। भगवान ने वह वेदना भी शांती से सहन की।

बच्चों। जो समताभावसे, शांतिसे अपने उपसर्गो को सहन करतें है और समभाव में रहतें हैं उनके ही कर्मो का क्षय होता है और नये कर्मो का बंध नहीं होता। इस प्रकार जब सभी कर्मो का क्षय हो जाता है तब आत्मा परमात्मा बन जाती है। वह भगवान बन जाता है।

अभिग्रह समाप्ति और दान प्रभाव

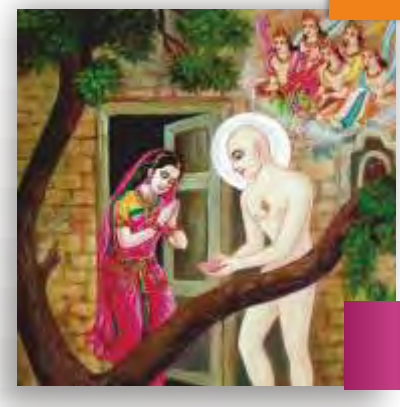

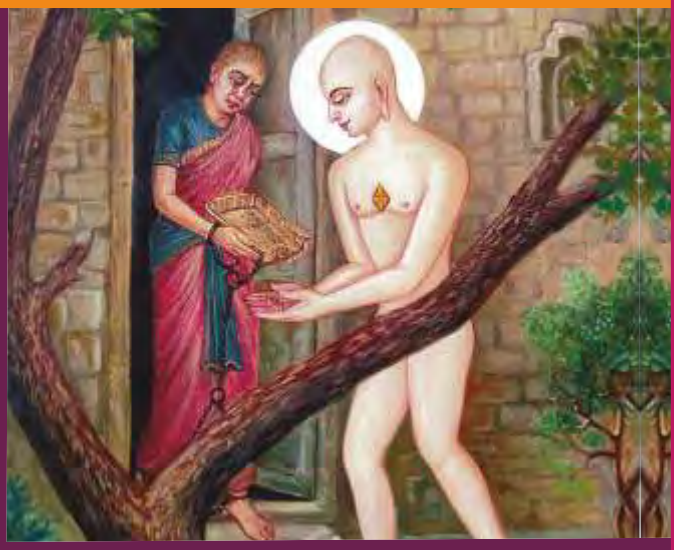

भगवान कठिन अभिग्रह के साथ कौशाम्बी के घर घर में पधारतें हैं किन्तु कोई भी घर में उनका अभिग्रह पूरा नहीं होता है। लोग भी उनके अभिग्रह को जानतें नहीं है इसलिए चिन्तातूर रहतें है।

एक के बाद एक दिन बित रहें है। एक के बाद एक मास व्यतित हो रहा था और हरएक दिन भगवान का उपवास हो जाता था। ५ मास और २५ दिन बीत चुके तब नित्य नियमानुसार भगवान गौचरी के लिए धनावह शेठ के वहाँ पधारे।

उसी समय वहाँ एसा हुआ कि चम्पावति राजा दधिवाहन की पुत्री चन्दनबाला को पापकर्म के उदय के कारण बिकने का प्रसंग आया। धनावह ने उसे खरीदा। शेठ की अनुपस्थिति में शेठ की पत्नी मूला शेठानी ने ईर्ष्यावश चन्दनबाला का सिर मुँडवाकर तथा पैरमें बेड़ियाँ डालकर उसे भूमिग्रह में ड़ाल दिया। तीन दिन बाद शेठ को पता लगने पर उसे बाहर निकाल कर उड़द के बाकुले खाने को दिये और बेड़ियाँ खुलवाने के लिए किसीको बुलाने गये।

यहाँ चन्दनबाला दान देने के लिए किसी मुनि की प्रतिक्षा कर रही थी इतने में स्वयं भगवान पधारे। भगवान ने देखा उनके संकल्प के अनुसार सारी प्रतिज्ञाएं पूर्ण हो रही है, सिर्फ आँख में आँसु नहीं है। अतः वे वापस जाने लगे, उनको वापस जाते देखकर चन्दनबाला जोरसे रो पड़ी। भगवान रुदन सुनकर लौट आये और चन्दनबाला के हाथ से बाकुले ग्रहण किये। भगवान का दुष्कर अभिग्रह समाप्त हुआ। उस समय दान प्रभाव से देवकृत पाँच दिव्य प्रकट हुए।

धन्य चंदनबाला... धन्य दान।

चारों ओर ध्वनी गुंज उठी और चंदनबाला की बेड़ियाँ तूट गई, बाल आ गये, और वह फिरसे राजकुमारी बन गई। बच्चों ! सुपात्र दान का यही प्रभाव है।

परम समाधिमें तल्लीन भगवान

मोक्षमें स्थान प्राप्त करने के लिए आत्मा के साथ एकरूप होना चाहिए और अनंत कर्मो का क्षय करना चाहिए। परंतु, इससे पूर्व केवल ज्ञान का महान प्रकाश प्राप्त करना चाहिए। उस प्रकाश की प्राप्ति के लिए चार घाती कर्मो का क्षय करने के लिए संयमपूर्वक तप करना चाहिए और एकाग्र ध्यान साधना करनी चाहिए। उसमें जो जो कष्ट, उपसर्ग और संकट आएँ उनका साहसपूर्वक, धैर्य और समताभाव से सामना करना चाहिए और अपने ध्येय में अड़ग रहना चाहिए। क्रोध, मान, माया, लोभ आदि अवगुणो को नष्ट करते हुए क्षमा, नम्रता, सरलता और संतोष जैसे गुणों का विकास करना चाहिए। राग-द्वेष रहित वीतराग दशा प्राप्त करनी चाहिए तभी आत्मा के बाकी चार अघाती कर्मो का क्षय होता है।

जब आत्मा आठों कर्मो से रहित हो जाती है तब वह मोक्ष की अधिकारी बनती है। भगवान की महान आत्मा अब तप और धर्मध्यान की पराकाष्टा पर पहुँच कर शुध्ध और शुक्ल ध्यान में प्रवेश कर रही है।

बच्चों! भगवान ने 12½साल तक संयमपूर्वक तप किये और कठोर ध्यान साधना में मन को एकाग्र किया। हर एक प्रकार के उपसर्गो को समभाव से शांतिपूर्वक सहन कर सबके उपर करुणा कि और इस प्रकार सारे कर्मो को जलाकर भष्म कर दिया। उनकी आत्मा शुध्ध, निर्मल हो गई।

भगवान को केवलज्ञान की प्राप्ति

भगवान विहार करके जृम्भिक गाँव आये। वहाँ गाँव के बाहर बहती हुई ऋजुवालिका नदी के किनारे पर स्थित खेतमें पधारे तब उनका दूसरा उपवास था।

भगवान सालवृक्ष के नीचे धूप में ही गोदोहिका मतलब ऊकडूँ आसन में बैठकर ध्यान में लयलीन हो गये। विविध विषयों से मन को खींच कर इष्ट वस्तु पर ध्यान को केन्द्रित किया। मन एकदम शांत और विचार शून्य होने लगा और भगवान विशुध्ध शुक्लध्यान में प्रविष्ट हुए। भगवान के चार घाती कर्म-मोहनीय, ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय तथा अन्तराय कर्म क्षय हो गये और भगवान को केवल ज्ञान, केवल दर्शन प्रकट हुआ। उस समय वैशाख सुद दसमी का चौथा प्रहर था। तब से भगवान सर्वज्ञ और सर्वदर्शी बने। और तीनों लोक के पूजनीय बने।

बच्चों! भले ही हम भगवान जैसी कठिन साधना एवं कठोर तप न कर सके, पर भगवान बनने के लिए छोटे छोटे तप और छोटी छोटी साधना से शरूआत तो कर सकते है ना..!!

अगर, हम भगवान की ओर पहुँचने के लक्ष्य के साथ एक कदम भी उठाते है, तो बाकी के कदम देवगुरु की कृपा से आगे बढ़ने लगते हैं।

देवनिर्मित समवसरण में भगवान द्वारा देशना।

यहाँ भगवान महावीर स्वामी को केवलज्ञान प्रकट हुआ और वहाँ इन्द्र आदि के आसन कंपित हो उठे। सभी देव अत्यंत हर्षित हुए और उत्सव मनाने के लिए आ पहुंचे।

प्रथम उन्होंने भगवान के दर्शन किये और वंदन किये। फिर भगवान की देशना के लिए समवसरण की रचना की।

केवलज्ञानी भगवान के प्रवचन को जैन परिभाषा अनुसार ''देशना'' कहतें है और उनकी धर्मसभाको ''समवसरण'' कहते है।

यह समवसरण गोल होता है। यह तीन गढ (मंजिल) का होता है। ईसमें नीचे से पहला गढ चांदी का, दूसरा सोनेका और उस पर तीसरा विविध प्रकार के मणि-रत्नो का होता है। पहला गढ वाहन के लिए, दूसरा पशु पक्षीओ के लिए और तीसरा देव-मनुष्यो के लिए होता है। ईसके बिचमें विशाल अशोक वृक्ष होता है। अशोक वृक्ष के नीचे भगवान के लिए चौमुखी सिंहासन होता है। यहाँ बैठकर भगवान अर्धमागधी भाषामें देशना देतें है। भगवान के विशिष्ट अतिशय - प्रभाव के कारण विविध भाषी मनुष्य तथा पशु-पक्षी अपनी ही भाषा में समज लेतें है।

केवलज्ञान प्रागट्य के बाद यह प्रथम समवसरण में देशना सुनने केवल देवोकी ही उपस्थिति थी।

भगवान के समवसरण में ब्राह्मणों का आगमन।

केवलज्ञान प्रकट के बाद इन्द्र आदि रचित भव्य समवसरण में भगवानने प्रथम देशना देवो को दी। यह धर्म सभा में केवल देवों के होने से किसी को भी सर्वविरति-देशविरति आदि विषयक त्याग परिणाम नहीं हुआ।

वहाँ से भगवान विहार करके पावापुरी के महासेन उध्यानमें पधारे। वहाँ देवो नें समवसरण की रचना की। यह दूसरी धर्मसभा में असंख्य देव तथा मनुष्यों के बीच भगवानने देशना दी। हजारों हृदय धर्म भावना से भावित हो गये।

दूसरी ओर इसी नगर में एक महायज्ञ आरंभ हुआ था। वहाँ अनेक विद्वान ब्राह्मण आयें थें और स्वयं अपने आपको सर्वज्ञ मानतें थे। उनमें मुख्य इन्द्रभूति थे। उन्होनें जब देखा कि सभी देव - इन्द्रादि यहाँ आने के बदले भगवान महावीर को वंदन करने जा रहे है तब वे क्रोधित हुए, ''मेरे अतिरिक्त जगतमें ओर कोई सर्वज्ञ है ही कहाँ?'' यह कोई धूर्त - प्रतित होता है और वे सेकड़ो शिष्यो के साथ समवसरण की ओर चल पडे, किन्तु दूरसे ही भगवान को देखते ही स्तब्ध हो गये।

निकट आने पर भगवान के मुख से उनका नाम और गोत्र सुनकर आश्चर्य चकित हो गये। फिर जब भगवानने उनकी शंका का समाधान दिया तब उनका गर्व समाप्त हो गया।

भगवान महावीर के मुख से अपना नाम, गोत्र और मनका संशय सुनकर इन्द्रभूति को बहुत आश्चर्य हुआ था और जब अपने मनका समाधान हुआ तो उनका घमंड चूरचूर हो गया। इन्द्रभूति को सत्य समझ में आया।

वह भगवान के चरणों के पास बैठ गये। और भगवान के प्रेम और वात्सल्य में अपने आपको धन्य मानने लगे। भगवान के प्रति उनका आदर और अहोभाव बढने लगा। भगवान की ज्ञानवाणी सुनते सुनते वह अपने आपको और अपने ५०० शिष्यों को भी भूल गये। अपना तन-मन सब कुछ भगवान के चरणों में रख दिया और भावुक होकर बोले, ''मुझे आपका शिष्य बना दिजिए आजसे आपही मेरे सबकुछ हैं।'' भगवान तो त्रिकाल ज्ञानी थे। वे तो सबकुछ जानते थे।

शास्त्रोका सर्जन और श्रीसंघकी स्थापना

इन्द्रभूति ने अपने ५०० शिष्यों के साथ भगवान के पास दीक्षा ले ली।

यह बात अन्य १० विद्वानों को ज्ञात होने पर वे भी अपने शिष्यों के साथ वहाँ आ पहुंचे। भगवानने सभी के मनकी शंका का समाधान दिया। सभी संतुष्ट और प्रसन्न हुए और सभीने एक साथ भगवान के पास दीक्षा ले ली।

भगवानने कुल ४४०० ब्राह्मणों को दीक्षा दी। भगवानने 'त्रिपदी' दी। उसके आधार पर प्रत्येकने अर्धमागधी भाषा में आगम की रचना की। इन्द्रभूति गौतम प्रधान शिष्य बने। ११ मुख्य मुनि-गणधर बने।

अंतिम देशना और निर्वाण

भगवानने भारतके अनेक देशो में विचरण करके हजारों को दीक्षा दी, लाखों लोगों को धर्मिष्ठ बनाये। अन्त में दीक्षा के ४२, केवली पर्याय के ३० और जन्मके ७२ वें वर्ष में अन्तिम चातुर्मास और अपने जीवनका-देहका अन्तिम वर्ष पूर्ण करने के लिए भगवान बिहार देश की पावापुरी नगरी में पधारें। वहाँ चातुर्मास किया। अनेक भाविकोने प्रवज्या ली। आसो मास की अमावस्या के दिन अपना परिनिर्वाण जाना और दो दिन निर्जल उपवास किये। लोककल्याण के लिए स्वर्णकमल पर पद्मासन में बैठकर अन्तिम देशना प्रारंभ की। सभामें देव, चतुर्विध संघ, अन्य जनता और काशी-कौशल आदि १८ गणराजा भी उपस्थित थे।

भगवानने पुण्य और पाप के फल के विषयका वर्णन किया। अमावस्या की पिछली रात्रि के चार प्रहर बाकी रहे तब प्राणी मात्र के कल्याण के लिए सोलह प्रहर यानि ४८ घंटे तक अविरत देशना दी। वह पूर्ण होते ही बाकी बचे अघाती कर्मों का क्षय हो गया। अष्ट कर्मों का क्षय करके ७२ वर्ष की आयु पूर्णकर भगवान की आत्मा सदा के लिए देह को छोड़कर उर्ध्व आकाश में स्थित मुक्ति स्थान में तत्काल पहुँच कर ज्योति में ज्योति मिले वैसे मिल गई। वे सम्पूर्ण सुखों के भोक्ता बने।

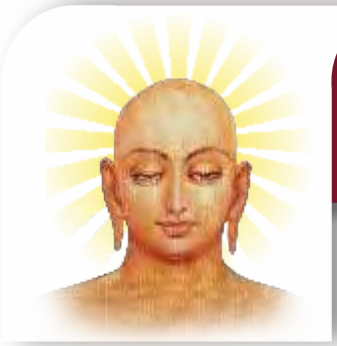

Let's know our Parmatma
આવો, પરમાત્માની ઓળખ કરીએ...!

Dear Children,

Now, you are aware the of 27 births of our Bhagwan Mahavir. Do you remember all of them? If yes, please name them in the boxes below and test your memory. All the best..!!

વ્હાલા બાળકો,

હવે, તમે ભગવાન મહાવીરના ૨૭ ભવ વિશે જાણ્યું. શું તમને બધા ભવ યાદ છે? જો... હા, તો ચાલો... નીચે આપેલા બોક્સમાં લખો અને તમારી યાદશક્તિની કસોટી કરો...!!

1st Bhav Manushya	2nd Bhav	3rd Bhav	4th Bhav	5th Bhav
6th Bhav	7th Bhav	8th Bhav	9th Bhav	10th Bhav
11th Bhav	12th Bhav	13th Bhav	14th Bhav	15th Bhav
16th Bhav	17th Bhav	18th Bhav	19th Bhav	20th Bhav
21st Bhav	22nd Bhav	23rd Bhav	24th Bhav	25th Bhav

26th Bhav	27th Bhav

સત્યાવીસમો ભવ
ભગવાન મહાવીર

Twenty Seventh Birth
Bhagwan Mahavir

卐 મહોત્સવના મંગલ કાર્યક્રમો 卐

ભાવભર્યું આમંત્રણ

કોલકતાના ઇતિહાસમાં પ્રથમવાર એકસાથે ત્રણ દીક્ષા

પરમ સંયમ ઉત્સવ

18th NOVEMBER, 2019

10.11.2019 | રવિવાર

સવારે 07:00 કલાકે
શાસન પ્રભાવના યાત્રા
માતુશ્રી રેખાબેન જીતેન્દ્રભાઈ શાહ પરિવારના નિવાસસ્થાનથી શાસનની ગરિમા વધારનારી ગૌરવવંતી શોભાયાત્રાનો પ્રારંભ

14.11.2019 | ગુરુવાર

સવારે 08:00 કલાકે
સ્વસ્તિક વિધિ એવમ્ પ્રવચનમાળા
કલ્યાણ મહોત્સવના પ્રથમ ચરણના શુકનવંતા વધામણા
બોધ નાટિકા - સંયમ ભય કે ભાન ?

બપોરે 02:00 કલાકે
સાંજી
દીક્ષાર્થીના સંયમભાવની અનુમોદનાના ગાન

સાંજે 07:00 કલાકે
સાધક સાધના દર્શન નાટિકા

15.11.2019 | શુક્રવાર

સવારે 08:00 કલાકે
રજત તુલા વિધિ એવમ્ પ્રવચનમાળા
અતુલ્ય મુમુક્ષુ આત્માની બહુમૂલ્ય તુલા વિધિ
સમસ્ત કોલકાતાના સ્થા. જૈન સંઘ સન્માન

બપોરે 02:00 કલાકે
સાંજી

સાંજે 07:00 કલાકે
નાટિકા - અરિહંત કી અદાલત

16.11.2019 | શનિવાર

સવારે 07:00 કલાકે
મંડપ મુહૂર્ત
ધર્મના ચાર મુખ્ય સ્તંભનું આરોપણ કરવાનો માંગલિક અવસર

સવારે 08:00 કલાકે
સ્નેહ બંધન એવમ્ પ્રવચનમાળા
ભાઈની કલાઈ પર દીક્ષાર્થી દ્વારા સંસાર જીવનના અંતિમ કલ્યાણ બંધનનું દ્રશ્યાંકન

બપોરે 02:00 કલાકે
ઉપકરણ વંદનાવલી
દીક્ષાર્થીઓને ઉપકરણોની સોગાદ આપતી કલાત્મક દર્શનનો અવસર

બપોરે 03:00 કલાકે
સાંજી

સાંજે 07:00 કલાકે
બાલ દીક્ષા મહોત્સવ
બાળ શૈલીમાં દીક્ષાના માંગલિક ઉત્સવોની રસપ્રદ ઉજવણી

સાંજે 08:00 કલાકે
નાટિકા-મજા વિરુદ્ધ સજા

17.11.2019 | રવિવાર

સવારે 07:00 કલાકે
શાસન પ્રભાવના યાત્રા
માતુશ્રી હંસાબેન જસવંતરાય માલાણીના નિવાસસ્થાનથી સંયમ ધર્મના જયનાદની ગૌરવવંતી શોભાયાત્રાનો પ્રારંભ

સવારે 08:00 કલાકે
માતૃપિતૃ વંદના એવમ્ પ્રવચનમાળા
ઉપકારી માતા-પિતાના ઋણ સ્વીકારનો અવસર
વિદાય સમારોહ
સંસાર અલવિદા કરતાં મુમુક્ષુ આત્માઓને સ્નેહભીની વિદાયના દ્રશ્યાંકન
જ્યોતિર્મય
સંબંધોની reality દર્શાવતી નાટિકા

બપોરે 02:00 કલાકે
કોળિયા વિધિ
દીક્ષાર્થીને અંતિમવાર પોતાના હાથે કવલ અર્પણ અવસર

બપોરે 03:00 કલાકે
સાંજી

18.11.2019 | સોમવાર

સવારે 07:00 કલાકે
દીક્ષાર્થી મહાભિનિષ્ક્રમણ યાત્રા

સવારે 08:00 કલાકે
શ્રી ભાગવતી જૈન દીક્ષા મહોત્સવ

Registered with Registrar of Newspapers under RNI No. MAH MUL/2011/40056
Vol.: 14, Issue: 07, Date:10.11.2019, Postal Registration No. MNE/171/2018-20.
Date of Posting / Date of Publication 10th & 25th of every month.
License to post without prepayment, WPP license No. MR/Tech/WPP-273/NE/2019.
Look N Learn - Posted at Mumbai patrika channel sorting office Mumbai -1

।।પૂજ્ય ડુંગર-જય-માણેક-પ્રાણ-રતિ-જગ-જયંતિ-ગિરિ ગુરુભ્યો નમ:।। ।।શ્રી મહાવીરાય નમ:।। ।।શ્રી જશ ઉત્તમ પ્રાણ ગુરુભ્યો નમ:।।

શ્રી કોલકાત્તા જૈન શ્વેતાંબર સ્થાનકવાસી ગુજરાતી સંઘ અને પારસધામના ઉપક્રમે

તપસમ્રાટ પૂજ્ય ગુરુદેવ શ્રી રતિલાલજી મહારાજ સાહેબના કૃપાપાત્ર સુશિષ્ય

દીક્ષાદાને શ્વરી રાષ્ટ્રસંત પરમ ગુરુદેવ

શ્રી નમ્રમુનિ મહારાજ સાહેબના પરમ શરણમાં

મુમુક્ષુ શ્રી હિરલબેન કેતનભાઈ જસાણી

મુમુક્ષુ શ્રી ચાર્મીબેન દેવેન્દ્રભાઈ સંઘવી

મુમુક્ષુ શ્રી કિષ્નાબેન વિશાલભાઇ હેમાણીનો

પરમ સંયમ ઉત્સવ

18th NOVEMBER, 2019

સોમવાર, સવારે 08:00 કલાકે

પરમના પગલે-પગલે...

પ્રભુ જેવું જીવન જીવવા... હવે 1 નહીં, 3 દીક્ષા !

Publisher, Printer and Owner Ashok R. Sheth, Printed at : Accurate Graphics Pvt. Ltd.,
15-A, Samrat Mill Compound, L.B.S Marg, Vikhroli (W), Mumbai - 400 079.
Publish at Mumbai : 20, Vanik Nivas, Kama Lane, Ghatkopar (W), Mumbai - 86. Editor : Ashok R. Sheth